देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

9 772395 711007

Impact Factor
7.523

ISSN : 2395-7115
March 2023
Vol.-17, Issue-3

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

सम्पादक : डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट	9-9
2.	फलौदी परगने का इतिहास	दिनेश गहलोत	10-16
3.	ग्रामीण विकास में सूचना एवं संचार तकनीकी का महत्व	डॉ. अशोक कुमार मीणा	17-20
4.	पुस्तकालय की सेवाओं में इंटरनेट की भूमिका : एक अध्ययन	मनीष शर्मा	21-23
5.	महादेवी वर्मा के काव्य में विरहानुभूति	संगीता शर्मा	24-29
6.	आधुनिक परिवेश में धर्म के महत्व को स्वीकार करते हुए ग्रामीण महिलाओं की उसमें सहभागिता (बागेश्वर जिले के कपकोट ब्लॉक के असों गांव के विशेष संदर्भ में)	डॉ. कल्पना जोशी, डॉ. कंवलजीत कौर	30-36
7.	यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र के उपन्यासों में समाज और समुदाय	विनोद कुमार गुप्ता, डॉ. आदित्य कुमार गुप्त	37-40
8.	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित भारतीय सांस्कृतिक चेतना	डॉ. ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी, डॉ. सोनम शुक्ला	40-46
9.	भारतीय संस्कृति तथा विभिन्न धर्म	दिनेश	47-51
10.	बिहारी सतसई में बिंब विधान	रूपेश कुमार	52-56
11.	चारूदत्तम् की प्राकृत में प्रयुक्त तिङन्त क्रियारूप	डॉ. अश्विनी कुमार	57-60
12.	हिन्दी उपन्यासों में किन्नर की मनोदशा का यथार्थ चित्रण	डी. श्रीदेवी	61-63
13.	The theme of Death and Decay in the Poetry of Philip Larkin	Dr. Roshan Lal	64-68
14.	Interrogating the Stereotype of Shoorpanakha : A Study of Poile Sengupta's Thus Spake Shoorpanakha, So SaidShakuni	HEMANT KUMARI, DR. GARIMA	69-76
15.	वैश्विक जलवायु परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन	डॉ. वेदप्रकाश	77-83
16.	भारतवर्ष की अवधारणा प्राचीन शास्त्रों में	Dr. Rajesh Kumar Sinha	84-89
17.	भारत-चीन संबंध : एक अनुशीलन	सुमन देवी	90-93
18.	जनजाति समाज एवं संस्कृति	डॉ. (कु.) जयंती सोनवानी	94-101
19.	21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित मूल्य	डॉ. शालू तिवारी	102-106
20.	मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में आधुनिक सन्दर्भ	अफीफा फातिमा शेक, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	107-111
21.	शरणार्थियों की जीवन-गाथा : कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए	डॉ. सुगता ए आर	112-116
22.	राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में संयुक्त परिवारों में व्याप्त विघटन	डॉ० आँचल कुमारी	117-120

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
March 2023
ISSN : 2395-7115
Page No. : 107-111
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में आधुनिक सन्दर्भ

अफीफा फातिमा शेक, शोधार्थी
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, असिस्टेंट प्रोफेसर एंड हेड
वेल्स इंस्टीट्यूट आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एडवांस स्टडीज (विस्टास), पल्लवरम, चेन्नई।

शोध सार :-

प्रस्तुत शोध पत्रिका का मुख्य उद्देश मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में आधुनिक संदर्भ को रेखांकित करना है। विचार एवं भावोंमें परिवर्तन होने से ही आधुनिकता आ जाती है। आधुनिकता आज जीवन का अंग बन गई है। जो जीवन हमें जीना है वह बेहतर तरीके से कैसे जिया जाना चाहिए? उसमें जो नवीनता है वह बिना किसी का आत्मसम्मान खोये समृद्ध बन सकता है? यह है आधुनिकता। इसमें विचार स्वतंत्र तो होता ही है। आधुनिकता में स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व पर विशेष जोर दिया जाता है। आधुनिकता की उपज ही पूंजीवादी सभ्यता, व्यक्तिगत चेतना पर ज्यादा जोर रहता है। फलस्वरूप सिफारिश एवं रिश्वत, बदलता शिक्षा स्तर, अकेलापन, पाश्चात्य प्रभाव, बाहरी दिखावा, बदलते परिपेक्ष्य आदि विकृतियां पनपी। यह सारी आधुनिक भाव–बोध की ही उपज है, जिसे मनीषा कुलश्रेष्ठ ने कहानियों के माध्यम से वर्णित करने का प्रयास किया है।

आधुनिकता एक प्रक्रिया है, प्रवृत्ति मूल्य है जो रूढ़ियों तथा सनातन धर्म परंपराओं से विद्रोह करते हुए उनको नकारने का स्वर बुलंद करती है और साथ में नवीनता एवं प्रयोगधर्मिता के प्रति आग्रह भी प्रकट करती है। आज की अर्थात्वर्तमान की स्थिति का यथार्थ परिज्ञान ही आधुनिकता बोध का मूल आधार है और वर्तमान का प्रभावी सत्य है। एक ऐसी बौद्धिक तथा मानसिक स्थिति है, समस्त परिवेश और समाज की जटिल एवं गहनतम समस्याओं के फलस्वरूप उद्‌भुत होकर अपने समकालीन जीवन को संस्कार प्रदान करती है। वस्तुतः आधुनिकता वर्तमान के युगीन यथार्थ को सजग रूप में भोगने और उस भोग से जीवन और जगत् के नए संदर्भ देखने तथा जीने की क्षमता है। यह एक मनोवृति है जो विभिन्न स्थिथियों में प्रतिफलित होती रहती है। लेखिका ने आधुनिकता को साहित्य में स्थान दिया है। समाज में बदल रही परिस्थितियों एवं व्यक्ति की सोच में आए परिवर्तन, नारी की बदलती स्वतंत्र सोच को जगजाहिर करने के दृश्य को अंकित किया है। आधुनिक साहित्य वास्तविक जीवन का यथार्थ चित्रण करता है।

मुख्य शब्द :- आधुनिक साहित्य, बाहरी दिखावा, क्षण का महत्व, सिफारिश एवं रिश्वत, असुरक्षित जीवन, पाश्चात्य प्रभाव, बदलते परिपेक्ष्य।

परिचय : मनीषा कुलश्रेष्ठ ने आधुनिकता को साहित्य में स्थान दिया है। समाज में बदल रही परिस्थितियों एवं

व्यक्ति की सोच में आए परिवर्तन, नारी की बदलती स्वतंत्र सोच को जगजाहिर करने के दृश्य को अंकित किया है। आधुनिक साहित्य वास्तविक जीवन का यथार्थ चित्रण करता है। आधुनिक साहित्य में बाहरी दिखावा करने की प्रवृत्ति तीव्रता से बढ़ रही है। उस प्रवृत्ति ने आत्मीय रिश्तों को खोखला बना दिया है। रिश्तो की कद्र करना एवं स्वयं को दिखावे की प्रवृत्ति ढाल लेना ही व्यक्ति का प्रथम कर्तव्य बनकर रह गया है। पाश्चात्य जगत की क्षणिक चकाचौंध से आकर्षित होकर युवा वर्ग उस और दौड़ रहे हैं। वह वहां की संस्कृति को, वहां के फैशन को अपनाकर जो व्यवहार एवं दिखावा करते हैं। वह उनमें इस कदर जड़े जमाए बैठा है कि वह दिखावा करने की प्रवृत्ति से स्वयं की औकात से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं। आज समाज में प्रत्येक व्यक्ति स्वयं की औकात से कहीं अधिक दिखावा करना बेहतर समझता है। समाज में प्रत्येक रिश्तों में भी जो एक दिखावटीपन है वह दिखाई देता है।

प्राचीन समय में जहां पति–पत्नी का रिश्ता सबसे पवित्र माना जाता था, आज वह भी मात्र दिखावा बनकर रह गया है। 'क्या यही वैराग्य' कहानी में सुमेधा के ससुराल वालों में दिखावा करना बेहद सामान्य बात हो गई है जिसे स्वयं पुखराज की मां व्यक्त करती है "संपन्नता तो जैसे टपकी पड़ती है इस परिवार में। अभी तो देखना जब काका सा और बुआ सा के घर की बेटियां–बिंदणियाँ आएगी चेहरा भले ही आधा घुंघट से ढका होगा मगर सोने के कामवाली पोशाकें और हीरे–मोती–जड़े लकदक जेवर। वह यही सोच कर मुस्कुरा दी।"[1] तभी समारोह के दौरान सुमेधा की सास, बहू को जेवर और भारी साड़ी पहनने को कहती है ताकि समाज में उनकी मान–मर्यादा का पता लोगों को, उनकी बिरादरी वालों को भी पता चले।" उसे आदेश था कि बस बहू की तरह तैयार हो जाए, जेवर कपड़े भी उन्होंने तय कर दिए थे और उसकी अलमारी में रख दिए थे। उन्हें पता जो था कि उनकी डॉक्टर बहू हल्की साड़ी और पतली सोने की चेन पहन कर खड़ी हो जाएगी सोआज उसकी नहीं चलेगी। घर में इतना बड़ा आयोजन जो है, पूरे खानदान की औरतें आऐंगी तो क्या सोचेगी। पुश्तैनी जेवर तो पहनने ही है।"[2] अतएव लेखिका ने संपन्न परिवार वालों की बाहरी दिखावे को उस प्रवृत्ति को चित्रित किया है। जीवन में समय की महत्ता किसी से छिपी नहीं है। समय को लेकर लोगों का यह बहाना अक्सर सुनने को मिलता है कि क्या करें समय ही नहीं मिलता।

दरअसल समय की गति को रोका नहीं जा सकता। जो लोग समय के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल पाते वे सदा के लिए पिछड़ जाते हैं। दिक्कत यह है कि पहले लोग मूल्यवान समय को व्यर्थ के कामों में बर्बाद कर देते हैं और समय की कमी का रोना रोते रहते हैं। यह कहावत सच ही है कि बीता हुआ समय और बोले हुए शब्द कभी वापस नहीं आते। इसलिए किसी भी काम को कल पर नहीं टालना चाहिए। समय पर चाणक्य ने भी समय की महत्ता को स्वयं के शब्दों में कुछ इस तरह कहा है कि "जो व्यक्ति जीवन में समय का ध्यान नहीं रखता उसके हाथ असफलता और पछतावा ही लगता है।"[3] कहने का तात्पर्य है कि हर महान शख्सियत में यह गुण जरूर मिलता है और वह समय का सदुपयोग किसी ने सही ही कहा है कि जो लोग समय की कद्र नहीं करते समय भी उनकी कद्र नहीं करता।

'प्रेतकामना' के प्रोफेसर जो स्वयं के अकेलेपन से तंग आ चुके थे स्वयं के अकेलेपन को दूर करने के लिए वह स्वयं की छात्रा आणिमा के साथ ना चाहते हुए भी संबंध स्थापित करते हैं। जब वह आणिमा के साथ होते हैं, आणिमा स्मरण करते हुए सोचती हैं" कितना वक्त बीत चला था.... इस कामना को दफन करके, भूल गई

थी वह यह कामना एक स्वरूप सबल कामना थी, जिसे चुपचाप गला घोंटकर दफना दिया था। उसने बरसों पहले आज वही प्रेत कामना अवचेतन को विस्तृत गलियारों में भटक–भटककर चेतन की राह पा गई थी" और लपक कर इस एक पल में समा गई थी।"[4] कहानी मक्षण की महत्ता को वर्णित किया गया है पात्रों के माध्यम से। उन पलों को अभिव्यक्त किया है जो उन्होंने बिताए हैं चाहे वह खुशी का क्षण हो या दुख का मन की गहराइयों को प्रस्तुत कर समस्त महत्वपूर्ण क्षणों का चित्रण सफलतापूर्वक किया है।

आज का युग भ्रष्टाचार का युग है। समाज में प्रत्येक क्षेत्रमें भ्रष्टाचार व्याप्त है। सिफारिश एवं रिश्वत जैसी समस्याएँ आज समाज में विकराल रूप धारण करती जा रही है। इनके द्वारा कोई भी कार्य करवा सकते हैं। ऐसी विचारधारा समाज में सर्वत्र व्याप्त है। आज यह समस्या आधुनिक समाज में तो अभिशाप बन गई है जिससे कोई भी व्यक्ति स्वतंत्र नहीं है। वह स्वयं भ्रष्टाचार के जाल में स्वयं को निरंतर डूबता जा रहा है। लेखिका मनीषा कुलश्रेष्ठ ने कहानियों में इसी समस्या को आधुनिकता के संदर्भ में व्यक्त कर समाज में फैली इस बुराई को समाप्त करने का प्रयास एवं समाज में एक नवीन सोच के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया है। 'मास्टरनी' कहानी में अल्पना जो स्वयं के तबादले के लिए सिफारिश लगाती है तो वह रिश्वत देने के लिए तैयार हो जाती है "जी..... इतने पैसों का इंतजाम करने में सप्ताह तो लगेगा ही।"[5] स्पष्टतः समाज में व्याप्त स्वयं का काम करवाने के लिए रिश्वत देने से भी हिचकिचाता नहीं है। समाज में यह समस्या आज बढ़ती जा रही है। लोग कोई भी कार्य को करवाने में रिश्वत का सहारा लेते हुए उन्हें पूर्ण करते हैं चाहे उसके लिए उन्हें मजबूरन पैसों का इंतजाम करना पड़े।" उसके मन में जरा भी उम्मीद नहीं थी कि अचानक वह तीस हजार कहां से इकट्ठा कर लेगी या पहले से ही दस तरह के लोन्स चुकाते वह और उसके पति एक और लोन का भार उठा पाएंगे।"[6] स्पष्टता वह किसी भी तरह पैसा उठाकर रिश्वत देने के लिए तैयार हो जाती है। सिफारिश एवं रिश्वत के पद पर मंत्री भी सम्मिलित है। वह कार्य को करने के लिए पैसा मांगते हैं यही दृश्य यहां भी अंकित है। जब नायिका सुषमा स्वयं के तबादले के लिए मंत्री के खास आदमी से मिलती है तो वह कहता है "मैडम मंत्री के खास आदमी मेहता जी तो मिल जाएंगे, दोपहर एक बजे तक यही पहुंच जाएंगे। थोड़े स्पष्टवादी है, कह रहे थे काम तो हो जाएगा पर रीवार्ड चाहिए। यानी पैसा।"[7] अतः लेखिका ने समाज में फैली भ्रष्टाचार या रिश्वत जैसी समस्याओं को जगजाहिर किया है।

पुरातन समय से लेकर वर्तमान समय तक व्यक्ति जीवन असुरक्षित घेरे में गिरा रहा है। निर्बल ही असुरक्षित होते हैं क्योंकि आत्म बल की शक्ति ही सबल की सुरक्षा का आश्वासन, ऐसे में, अगर समाज को वैचारिक रूप से निर्बल बना दिया जाए तो वह स्वतः ही असुरक्षित महसूस करने लगेगी। बच्चे एवं नारी समाज का सबसे असुरक्षित हिस्सा है वे निर्भर है। यह यौन उत्पीड़न किसी भी प्रकार के शारीरिक मानसिक रूप से शिकार होते हैं। समाज में स्त्री पुरातन समय से ही असुरक्षित जीवन व्यतीत करने को विवश है और आज भी कहीं ना कहीं इससे जूझ रही है। आधुनिकता के इस दौर में जहां व्यक्ति की सोच में परिवर्तन हुआ वही साथ ही उसकी शारीरिक जरूरतें भी बढ़ती चली गई और वह स्वयं की शारीरिक भूख को मिटाने के लिए स्वयं की संतान के साथ ही कुकर्म करने से नहीं हिचकिचाता हैं। इसी कारण आज नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं है। जिसे लेखिका ने पात्रों के माध्यम से समाज के अन्य वर्ग व पाठक वर्ग को इससे अवगत करवाकर नवीन चेतना को जागृत करने का प्रयास किया है। 'रक्सकी घाटी : शबेफितना' कहानी में नारी जीवन के सुरक्षित जीवन नाजी

सकने के दृश्य को अंकित किया है। प्राचीन समय से वर्तमान समय तक नारी असुरक्षित है। किंतु मनीषा जी के पात्र नवीन सोच को लिए है जिसे नायिका गजाला व्यक्त करती हुई कहती है "फिर भी मुझे थोड़ी उम्मीद है क्या तुम्हें हैं? कि एक दिन ये कान सुनेंगे और आंखे देखेंगी। जबानों की उमेंठनें खुल जाएगी।"[8] स्पस्टतः गजाला मन में कहीं ना कहीं उम्मीद को संजोए हुए है कि नारी संसार में सुरक्षित होगी। लेखिका ने गजाला के माध्यम से नारी जीवन को जो सुरक्षित होने की भावना ह्रदय में संजोए हुए है वह एक न एक दिन अवश्य दूर होगा। नारी को स्वयं के भीतर एक नई नारी को पैदा करना होगा अर्थात उसे सोच को विकसित कर जगत में नई उड़ान एवं विचारों के साथ उड़ान भरनी होगी। तभी वह सुरक्षित जीवन की चाह को पूर्ण कर सकेगी और असुरक्षित होने की जो भावना ह्रदयमें रखे हुए हैं उसे जड़ से समाप्त करना होगा। एक नवीन चेतना को विकसित करना होगा।

आज के बदलते परिवेश में समाज पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव अधिक परिलक्षित होता है। जिससे साहित्यकार भी अछूते नहीं रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति हावी होती जा रही है। समाज दिशाहीन हो रहा है। युवाओं को अतीत के प्रति कोई सम्मान नहीं है। पाश्चात्य संस्कृति ने भारतीय जनमानस को विशेष रूप से युवाओं को गिरफ्त में ले लिया है। आज समस्त विश्व पाश्चात्य संस्कृति का अनुपालन कर रहा है। भारत में भी पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति का अनुगमन व अनुपालन धड़ल्ले से किया जा रहा है। मनीषा कुलश्रेष्ठ ने अपनी कहानियों में पाश्चात्य प्रभाव को अंकित किया है। पात्रों के माध्यम से उन्होंने आधुनिकता के संदर्भ में पाश्चात्य प्रभाव के रंग में रंगे लोगों के व्यवहार एवं उनकी सोच को व्यक्त किया है। मनीषा के पात्र आधुनिकता में तो रंगे हैं, किंतु साथ ही स्वयं के संस्कारों को भी अपनाए हुए हैं जिसे उन्होंने कहानियों में चित्रित किया है। 'बिगाड़ेल बच्चे' कहानी में ट्रेन में सफर कर रहे यंगस्टर्स को देखकर एक महिला यात्री उनके फैशन एवं व्यवहार के बारे में अपने पति से कहती है "देख रही है ना कितनी बेशर्मी से गंदी–गंदी किताबें देख रहे हैं, बड़े–बूढों का लिहाज ही नहीं है।"[9] लेखिका ने पुरानी पीढ़ी के उन लोगों की सोच को भी व्यक्त किया है जो नई पीढ़ी के युवाओं को गलत समझ लेते हैं। उनके पहनावे एवं उनकी स्वतंत्र सोच पर पाश्चात्य प्रभावों का जामा ओढ़े जाने को गलत समझ लेते हैं।

बदलते परिपेक्ष में आधुनिक होना चाहते हैं और आधुनिकता का तात्पर्य सिर्फ दिखावा भर होता है। इन सब की जड़ में कहीं न कहीं सामाजिक व्यवस्थाएं हैं। बदलते परिपेक्ष में लोगों की सोच के साथ–साथ उनके रहन–सहन में भी काफी बदलाव आया है। परिवर्तन सृष्टि का नियम है। परिवर्तन निरंतर होते रहते हैं वर्तमान युग में व्यक्ति जीवन मूल्यों से संघर्ष कर रहा है। जिसके कारण जीवन मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है। पुरानी मान्यताओं के विरोध, शिक्षा के विस्तार तथा पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से समाज में नए मूल्यों का जन्म होता है और समाज में स्वीकृत नैतिक मूल्यों के प्रति व्यक्ति का मोहकम होता जाता है। आज प्रत्येक व्यक्ति के मन में नए पुराने सांस्कृतिक मूल्यों को लेकर संघर्ष चल रहा है। व्यक्ति ने हमेशा ही नये मूल्यों को अपनाया है जिसके कारण प्राचीन मूल्य महत्वहीन हो रहे हैं। 'फांस' कहानी में अंतिमा जो पिता की मृत्यु होने पर उनका अंतिम संस्कार करती है। समाज में यह प्रथाहै कि अंतिम संस्कार केवल पुत्र के हाथों होता है। किंतु लड़की यह प्रथा बदलती है और पिता का अंतिम संस्कार करने को तैयार रहती है। तभी उसके जीजा कहते हैं "अंतिम क्रिया करमवाले तो वही है इनके भतीजे।"[10] समाज में पुरुष ही मृत्यु की यह प्रथा पूर्ण करता है। किंतु यह सब सुन

अंतिमा कहती है "इनका क्रिया–कर्म तो मैं ही करूंगी जीजा सा।"[11] स्पष्टतः अंतिमा जो पिता का संस्कार करना चाहती है वह इस प्रथा को बदलना चाहती है कि पुत्र न होने पर पुत्री भी पिता का अंतिम संस्कार कर सकती है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि लेखिका के कहानियों में आधुनिक संदर्भ को व्यक्त किया है। आधुनिक संदर्भ में या परिवेश में सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश बहुत ही तीव्रता से अंतर्विरोधी भावों से ग्रस्त होता जा रहा है। निजी स्वार्थ एवं भौतिकता वादी रोड में व्यक्ति स्वयं की यात्राओं का शिकार हो रहा है। लेखिका ने कहानियों में मानव मन की मनःस्थितियों को, उसके मानसिक संघर्ष को एवं नवीन विचारधारा को निरूपित किया है। साथ ही साथ मानव मूल्यों के कारण व्यक्ति और उसके परिवेश के प्रति जागरूकता आई है और जीवन मूल्यों में भी परिवर्तन आया है और उसकी जीवन प्रणाली में कृत्रिमता भी आई है। लेखिका के पात्र नवीन विचार, नवीन विचारधाराओं को लिए दिखाई देते हैं। वह आधुनिक समय में भी स्वयं के भीतर संस्कारों को जीवित रखे हुए हैं।

सन्दर्भ सूची :-

1. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'क्या यही वैराग्य (रंग–रूप, रस–गंध–1)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 21
2. वही, पृ. 22
3. www.wikipedia.com
4. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'प्रेतकामना (रंग–रूप, रस–गंध–1)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 58
5. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'मास्टरनी (रंग–रूप, रस–गंध–1)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 236
6. वहीं, पृ. 237
7. वहीं, पृ. 237
8. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रक्स की घाटी : शबे फितना (रंग–रूप, रस–गंध–2)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 236
9. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'बिगाड़ेल बच्चे (रंग–रूप, रस–गंध–1)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 118
10. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'फांस (रंग–रूप, रस–गंध–1)', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 341
11. वहीं, पृ. 342

गीना देवी शोध संस्थान

द्वारा श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रसारित

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

Impact Factor : 4.553

ISSN : 2321-8037

मार्च-अप्रैल 2023

Vol. 11, Issue 3-4

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

संपादक : डॉ. रेखा सोनी

संपादक : डॉ. बी. आर. भद्री

प्रधान सम्पादक : डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. रेखा सोनी	
2.	प्रवासी रचनाकार मोहन राणा के कविताओं में मानववाद	डॉ. मालतेश स. बसम्मनवर	7-7
3.	साठोत्तरी नाटकों के विविध विमर्श : दलित नाटकों के संदर्भ में	श्री. प्रदीप. राठोड	8-10
4.	मीराबाई के काव्य में निजी अनुभूति की अभिव्यक्ति	डॉ. वीना सोनी	11-15
5.	इक्कीसवीं सदी के काव्य में व्याप्त आम-आदमी की संवेदना	ब्रजेन्द्र कुमार सिंह	16-19
6.	शांति बाँह में चुभी चूड़ी के आँसू जितना जख्म... : 'पाश' 'युद्ध और शांति' के संदर्भ में	डॉ. रमेश यादव	20-24
7.	भारत विभाजन : मासूम बच्चों की त्रासदी	डॉ. अमित कुमारी	25-29
8.	नागार्जुन की कविताओं में सामाजिक और राजनीतिक चेतना	अनिता	30-34
9.	धूमिल के काव्य में समकालीन बोध के आयाम	रेनु	35-38
10.	सामाजिक मानसिकता व तृतीयक लिंगी समुदाय (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण)	डॉ० परेश द्विवेदी, उन्नति शर्मा	39-43
11.	समाज में उत्तर भारतीय संगीत की महान महिला संगीतज्ञों का योगदान	जया मींड, डॉ. पुनीता श्रीवास्तव	44-49
12.	वाग्येकार सादल्लाह मेव के "पंडुन का कड़ा" की आकर्षक परम्परा	रोशनी बानो, डॉ. रौशन भारती	50-60
13.	'ਪਰੀ ਲੋਕ ਦੀ ਸੈਰ ਕਰਾਵਾਂ' ਪੁਸਤਕ ਵਿਚ ਮਾਨਵੀ ਸਰੋਕਾਰ	-ਡਾ. ਪਰਮਜੀਤ ਕੌਰ 'ਪਾਹੁਲ'	61-63
14.	मीडिया शिक्षा और साइबर अपराध : मीडिया छात्रों के बीच साइबर अपराध के बारे में जागरूकता का एक अध्ययन	रोहताश, प्रोफेसर, (डॉ.) मनोज दयाल	64-68
15.	**Opportunities for Exchanging Sports Batting Management Skills in Career of Youth Cricketers in Bikaner Region**	**Jitender Singh, Dr. Braj Kishor Choudhary**	69-84
16.	**Mughal State Formation, Ideology and Military Tactics as part of Imperialism against Rajput powers in Medieval Times : A brief Survey**	**Dr. Meghna Sharma**	85-88
17.	मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में मनोवैज्ञानिक संदर्भ	अफीफा फातिमा शेक, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	89-95
			96-102

9

संगम Impact Factor : 4.553 Website : www.ginajournal.com ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 11, Issue 3-4
पृष्ठ : 96-102

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में मनोवैज्ञानिक संदर्भ

अफीफा फातिमा शेक
शोधार्थी, वेल्स इंस्टीट्यूट आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एडवांस स्टडीज (विस्टास), पल्लवरम, चेन्नई।
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, असिस्टेंट प्रोफेसर एंड हेड, डिपार्टमेंट ऑफ हिन्दी
वेल्स इंस्टीट्यूट आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एडवांस स्टडीज (विस्टास), पल्लवरम, चेन्नई।

शोध-सार :-

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में मनोवैज्ञानिक संदर्भ को रेखांकित करना है। मनोविज्ञान का संबंध मानव मन से है। अतः मनोविज्ञान द्वारा मानव मन के विविध व्यवहारों, क्रियाकलापों तथा आचरण का विस्तृत रूप से अध्ययन किया जाता है। जिस प्रकार मनोविज्ञान मानव जीवन से जुड़ा हुआ है उसी प्रकार साहित्य भी जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं। मनुष्य ने अपने मस्तिष्क के बल पर संसार के हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के दर्शन कराएँ हैं। उसने धर्म तथा अध्यात्म के साथ–साथ विज्ञान के क्षेत्र में भी छलांग लगाई है। आज का युग विज्ञान का युग कहा जाता है। विज्ञान को अपनाने के कारण मनुष्य को जीवन के प्रति देखने का वैज्ञानिक नजरिया प्राप्त हुआ। इसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण मनुष्य ने अपने आंतरिक तथा बाह्य सभी बातों में क्रांति का बीज बोया। लेखिका के साहित्य का आधार व्यक्ति का अंतर जगत है। लेखिका अपनी कहानियों के माध्यम से मनुष्य के मनोभावों पर प्रकाश डालने की कोशिश करती नजर आती है।

बीज शब्द :- मनोविज्ञान, साहित्य, मानसिक संघर्ष, तनाव, एकाकीपन, अहं भावना, हीनताग्रंथि, जिजीविषा, कुंठित यौनेच्छा, काम–भाव।

मूल आलेख :-

मनोविज्ञान का अर्थ है मन का विज्ञान जिसके द्वारा मन के भावों का ज्ञान अर्जित किया जा सके। मनोविज्ञान से अभिप्राय व्यक्ति के अन्तस्तल में उठने वाले क्रिया–कलापों के विश्लेषण से है। लेखक लाला शुक्ल के अनुसार "मनोविज्ञान मन की चेतन तथा अचेतन क्रियाओं का अध्ययन अपरोक्ष अनुभूति व बाह्य क्रियाओं के निरीक्षण द्वारा करता है।"[1] स्वतंत्रोत्तर भारतीय जन–जीवन को यांत्रिकी और विज्ञान ने पर्याप्त प्रभावित किया है। विज्ञान एवं यांत्रिकी ने समाज के सभी मानदंड प्रभावित किए। यह परिवर्तन जितना सामाजिक स्तर पर देखा गया है उतना ही वह मानसिक स्तर पर पर्याप्त रूप में लक्षित होता है। "यांत्रिकी के इस निविड वन में सतत वेगमय, जीवन की अवकाश हीनता, निरर्थकता, अजनबीपन, संत्रास, घुटन, मृत्यु बोध और अनेक कुंठाएँ तथा विकृतियां पैदा हो रही है। रचनात्मक विलगाव व्यक्ति के धरातल पर उन समस्याओं का हल है जो समाज ने

व्यक्ति के चारों और पैदा कर दी है।"[2]

साहित्य के वर्तमान युग को मनोविज्ञान युग नाम दिया गया है। मनोविज्ञान ऐसा विषय है, जिसने साहित्य को प्रभावित किया है। साहित्यकारों ने इससे मानव जीवन को पूर्णतया खोलकर व्यक्त करने में सफलता प्राप्त की है और व्यक्ति की सामाजिक वास्तविकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। वर्तमान साहित्य अब केवल प्रेम का राग नहीं अलापता, उसके बाह्य सौंदर्य को नहीं अंकता, बल्कि जीवन में उलझी हुई समस्याओं पर भी विचार करता है उसको सुलझाने की चेष्टा मनोवैज्ञानिक ढंग से करता है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ द्वारा लिखित 'मि. वॉलरस' नामक कहानी में मानसिक संघर्ष को केतकी के द्वारा अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। बाह्य संघर्ष की अपेक्षा अंतर्मन का संघर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब अंतर्मन में परस्पर विरोधी इच्छाएँ एक साथ सामने आती है तब मानसिक संघर्ष मन में पैदा होता है। संघर्ष केवल मनःस्तितियों का या मनःस्तितियों से परिस्थितियों का ही नहीं होता बल्कि परिस्थितियों से परिस्थितियों का भी होता है। कहानी की पात्र केतकी जो मि. वॉलरस से प्रेम करती है और वह मि. वॉलरस के साथ गृहस्थी जीवन जीने के सपने देखती है और सोचती है कि वह मुझे और इस बच्चे को अपनाएगा या नहीं! उसके अंतर्मन में उठने वाले इन्हीं प्रश्नों ने उसे संघर्षपूर्ण स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। वह स्वयं के इस प्रेम के बारे में परिवार वालों को भी नहीं बताती है। मि. वॉलरस के प्रेम को लेकर केतकी के मन में संघर्ष उमड़ता है। जब मि. वॉलरस का मित्र अजीत केतकी से पूछता हैं "आर यू अफ्रेड़ आफ वेटर लाइफ? कभी सोचा है कि तुम्हें क्या चाहिए अपनी जिंदगी से।"[3]

अतः अजीत के इस तरह के प्रश्न पूछने पर उसकी भावनाओं को ठेस पहुंचती है और वह संघर्षपूर्ण स्थिति में आ जाती है। उसके इस अवचेतन मन के मानसिक संघर्ष को प्रकट करती हुई वह कहती है कि "मुझे नहीं मालूम इस जिंदगी से क्या चाहिए.... एण्ड हाउ द 'फ' जस्ट गॉट सो फार! तुम कहते हो वक्त बदलता है, लेकिन यह तो वैसे ही रुका हुआ है। मैं भी वैसी ही हूं थकी हुई, ठंडे पैर लिए, अकेली नपुंसक गुस्से भरी! तुम्हारे दोस्त मि. वॉलरस जिन से मैं प्रेम करती हूँ आते हैं, चले जाते हैं, मैं वही की वही, स्क्रीन के आगे अकेली। कब बदलेगी अजीत यह जिंदगी।"[4] अतः केतकी उस संघर्षपूर्ण स्थिति में फंस गई है और उस नैतिक–अनैतिक के प्रश्नों ने उसे घेरे रखा है। अब वह इस संघर्ष से बाहर निकलना चाहती है स्वयं के लिए और पुत्र के लिए। इस जाल में स्वयं को इससे उभारकर अजीत के साथ इस दुख को बांटती हुई वह उसके मन में मि. वॉलरस के प्रति जो एक सोच थी उससे स्वयं को बाहर निकालकर कुशल जीवन व्यतीत करना चाहती है।

'अधूरी तस्वीरें' नामक कहानी में मानसिक संघर्ष की समस्या को कथाकार ने उजागर किया है। कहानी में सशक्त मानसिक संघर्ष के प्रत्यक्ष रूप को प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा परिभाषित किया गया है जो इस तरह से है "जिस संभावना को हम सोचते डरते हैं....... वह संभव तो हो ही नहीं सकती ना! मैं कल ही यहां से चला जाऊंगा। आज रात डिनर पर मामा जी से क्या कहूंगा? शायद मना कर दूंगा?"[5] अतः पात्र भावनाओं में उलझा है उसका अंतर्मन नीला को पसंद करता है, परंतु रिश्तों की नैतिकता के कारणवश वह नीला को नहीं अपना सकता। वह अनिर्णय की स्थिति में है कि वह नीला की बुआ सुधा को रिश्ते के लिए हां कर दे या ना। पात्र अविनाश का अवचेतन मन नीला के प्रति आकर्षित है परंतु नैतिकता कुछ और ही है वह नीला के प्रति आकर्षण के कारण सुधा को शादी के लिए हाँ और ना के प्रश्न में उलझा रहता है। खुद के सहज आकर्षण को स्वीकार

करता हुआ अविनाश कहता है "नीला! तुम मुझे प्रिय हो, तुम्हारी निश्छलता मुझे पसंद है।"[6] स्पष्टतः अविनाश नीला के प्रति आकर्षित है किंतु इस आकर्षण में नैतिकता का प्रश्न आते ही वह नीला से कहता है "कुछ नहीं नीला....... मैं जा रहा हूँ यहाँ से, यही उचित होगा तुम्हारे और मेरे लिए। मुझमें साहस नहीं है, एक साथ बहुत लोगों का विश्वास तोड़ने का।"[7] अतः अविनाश ऐसी परिस्थिति में आकर फंस जाता है जहां उसका चेतन और अवचेतन मन भी उसका साथ नहीं देते। अविनाश बुरी तरह से मानसिक संघर्ष की स्थिति में फंस कर रह जाता है और इसका क्रोध वह नीला पर विरोध दिखाता हुआ उस पर झल्लाता हुआ कहता है "क्या हुआ? बेवकूफ लड़की वो खत जो छोड़ आई थी, उसके हाथ पड़ जाता तो? मुझे नहीं करनी शादी–वादी! कहां फस गया मैं।"[8]

मानसिक संघर्ष की स्थिति में व्यक्ति चिंतनशील एवं विवेकशीलता की एकाग्रता से मनोचित भावों को दूसरों तक संप्रेषित नहीं करता। वरन चिंताग्रस्त होकर आत्म मंथन और आत्मसंलाप करने लगता है, वह मंत्रमुग्ध सा होता हुआ, जीवन की सच्चाईयों को प्रकट करने हेतु चिंतनशील होता है। जब व्यक्ति सही और गलत के प्रश्नों में उलझ जाता है, या चेतन और अवचेतन मन में उलझाव पूर्ण स्थिति पाता है, तो नैतिक–अनैतिकता के प्रश्न मन में उभरने लगते हैं। व्यक्ति उलझन में रहता है कि चेतन मन ठीक है या अवचेतन मन। एक उलझाव पूर्ण स्थिति उसके सामने होती है।

तनाव आज के समय की गंभीर समस्या बन गई है। तनाव व्यक्ति को पूर्ण रूप से रोगयुक्त बना देता है। तनाव व्यक्ति के मस्तिष्क में घर कर जाता है और वह तनाव से उभर नहीं पाता। बृहत हिंदी कोश की तनाव के विषय में मान्यता है "चिंता आदि की मानसिक स्थितियों में शरीर की शिराओं, धमनियों, स्नायु में होने वाला खिंचाव तनाव कहलाता है।"[9] अर्थात तनाव का संबंध मन से जोड़ा जाता है। 'एडोनिस का रक्त और लिली के फूल' कहानी में मेजर जो बॉर्डर पर घायल होता है हॉस्पिटल में तनाव से ग्रस्त कहता है "मैं अपने भीतर यह जहाज क्रेश होते देख रहा था। बिना तारों की इस रात में, जैसे चांद अकेला छूट गया था। मैं टूट कर रोना चाहता था, मुझे लग रहा है कि तुम मुझे भूल गई हो, मेरे यूनिट वाले और यह देश मुझे भूल गया है मैं कैसे बताऊं कि इस गर्म रात में जंग में घायल 70–80 लोग मेरे आस–पास कराह रहे हैं, मैं नहीं जानता कितनों की यह आखिरी रात है, घायल हर कोई है, देह पर ही नहीं, मन पर भी घाव है तुम मुझे फोन क्यों नहीं करती हो? कोई पत्र भी नहीं।"[10] इस तरह मेजर लड़ाई में अकेला एवं तनाव से ग्रस्त हो जाता है और इस अकेलेपन में अपनों को याद करता है। अतः लेखिका ने मेजर के तनाव को उसके दर्द भरे शब्दों में बयां किया है। व्यक्ति के जीवन में तनाव उसे जड़ बना देता है।

आज के मशीनी युग में एकाकीपन को बढ़ावा मिला है। पहले कई लोग इकट्ठे मिलकर खेतों में काम करते थे अब उसकी जगह मशीनों ने ले ली है। गांव एवं शहर का हर सदस्य अब रोजी–रोटी की तलाश में बिखर कर रह गया है। आज व्यक्ति की सबसे बड़ी ट्रेजड़ी उसका एकाकीपन बनकर रह गया है यही एकाकीपन ही उसकी नियति बनकर सबसे ज्यादा उस पर हावी होती जा रही है। जिसने उसको समाज व परिवार से भिन्न कर दिया है। 'कुछ भी तो रुमानी नहीं' कहानी में नायक स्वयं की जिंदगी से ऊब चुका है क्योंकि "उसे बचपन से ही माता–पिता का प्यार नहीं मिला। माता ने उसे छोड़कर सन्यास ले लिया, पिता ने उसे स्वयं से दूर स्कूल में डाल दिया।"[11] परिणाम स्वरुप वह स्वयं को अकेला अनुभव करने लगा। जीवन के प्रति अकेलेपन और ऊब से बचने के लिए वह रोमान्स भरपूर कहानियाँ लिखने लगा। अतएव लेखिका ने अकेलेपन को केवल संपूर्ण व्यक्ति

में ही नहीं बल्कि एक बच्चे में उस अकेलेपन को प्रदर्शित किया है। यह एकाकीपन बच्चे के मन पर भी गह... प्रभाव छोड़ता है जिसे लेखिका ने इस कहानी के पात्र के माध्यम से उसके बचपन के उस एकाकीपन को अभिव्यक्त किया है।

प्रत्येक व्यक्ति में अहम की प्रवृत्ति सहज रूप से विद्यमान रहती है। "अहं मनुष्य की जन्मजात स... स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है किसी में अधिक किसी में कम किंतु किसी भी जाति, वंश, वर्ण और आयु का होना अ... की प्रवृत्ति किसी ना किसी मात्रा में अवश्य विद्यमान रहती है। सामाजिक परिस्थितियां, परिवेश इस अहम भाव को बराबर प्रभावित करता रहता है, अहं भाव स्वयं में तब तक बुराई की श्रेणी में नहीं आता, जब तक कि वह स्वाभिमान के स्तर पर रहता है। अहं भाव जब अत्यधिक विकसित हो जाता है, तब घातक सिद्ध होता है।" 'टिटहरी' कहानी में गीति के माध्यम से अहं की समस्या को वर्णित किया गया है, इसी अहम के कारण गीति और अनिरुद्ध के बीच तनाव की लकीर उत्पन्न हो जाती है। गीति अनिरुद्ध से लड़ाई के पश्चात सोचती हुई कहती है "बस बहुत हो गया! अब यहां नहीं रहना।"[13] स्पष्टता इन शब्दों से गीति में आए अहं की झलक नज़र आ रही है इस तनाव का और उसके अहं का अनिरुद्ध पर कोई असर नहीं पड़ता यह देख वह अनिरुद्ध से और खींज जाती है और उसके भीतर अहंकार भाव अधिक आ जाता है और इस स्थिति में वह उस व्यक्ति के साथ जीवन व्यतीत नहीं करना चाहती है। धीरे–धीरे उसके भीतर अहं की भावना विस्तार रूप लेने लगती है।

स्वयं के मन से सवाल करती कहती है "क्या इसी आदमी के लिए वह स्वयं का ब्राइट, कैरियर छोड़कर हाउस वाइफ बानी बैठी है।"[14] स्पस्टतः गीति के भीतर अहं कि यह भावना विस्तार रूप लेती जा रही है इसी अहं के कारण अन्तर्मन से बात करती हुई कहती है "पर क्यों रोए वह? नहीं क्यों कमजोर हो उसके सामने?"[15] अतः लेखिका ने अहं जैसी समस्या को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है कि अहं व्यक्ति को इतना लाचार एवं उच्चता का प्रदर्शन करने वाला बना देता है कि वह ना चाहते हुए भी अहं भाव को ही श्रेष्ठ समझने लगता है। इसी अहं के कारण व्यक्ति मन ही मन स्वयं को सबसे भिन्न समझने का प्रदर्शन करता नजर आता है। स्वयं के आगे वह दूसरों को तुच्छ समझता है। उसमें यह भावना सर्वोपरि हो जाती है। अहं में डूबे व्यक्ति की यही भावना उसे एक दिन ले डूबती है।

हीनताग्रंथि सभी व्यक्तियों में पाई जाती है। इसका कारण समाज, परिवार या व्यक्ति स्वयं हो सकता है। जीवन में जब व्यक्ति निराश होता है तो उसका संघर्षमय जीवन होता है। व्यक्ति में किसी भी भाव की कमी के कारण हीनता का भाव उत्पन्न होता है। हीन ग्रंथि के कारण व्यक्ति स्वयं को असहाय और असुरक्षित महसूस करता है। ऐसे में वह किसी विषम स्थिति का सामना नहीं कर सकता। आज के भौतिक प्रधान वातावरण में व्यक्ति कृत्रिम व्यवहार के लिए बाधित है क्योंकि साधनों के अभाव में वह बनावटीपन में उन साधनों की पूर्ति करने का प्रयास करता है। जब वह अभाव की पूर्ति करने में असफल हो जाता है तो हीनग्रंथि उसके मानस पटल पर विकसित होने लगती है। राजकुमार राय ने हीनताग्रंथि के विषय में कहा है कि "जब व्यक्ति किसी कार्य में असफल हो जाते हैं और कोई दूसरा अभीष्ट भी या तो उपलब्ध अथवा वाँछनीय नहीं होता, तो प्रतिक्रिया स्वरूप व्यक्ति में निःसहायावस्था अथवा अपर्याप्तता के भाव विकसित हो जाते है। संवेगात्मक दृष्टी से इस मानसिक तनावपूर्ण अवस्था को है हीनभावना ग्रंथि कहते हैं। यह ग्रंथि प्रमुख रूप से उन्हीं व्यक्तियों में विकसित होती है जो स्वयं की व्यक्तिगत अक्षमता तथा दोषों को ही जीवन से अभीष्टों को प्राप्त कर सकने में स्वयं की असफलता

का कारण मानते है।"[16] 'बौनी होती परछाई' कहानी में हीनताग्रंथि को परिभाषित करने का प्रयास किया है। कहानी की पात्र रोहिणी को जब लड़के वाले देखने आते है। उस समय रोहिणी बी.एस.सी की शिक्षा ग्रहण कर रही थी, विवाह का सुनते ही उसके मन में सपने तैरने लगे थे, दिन-रात वह उन सपनों में खोई रहती थी। किंतु जब लड़के वाले उसे देखकर कहते है कि "लड़की जरा काली है।"[17] यह शब्द सुन रोहिणी के मन को पीड़ा हुई और तब रोहिणी ने इस विवाह नामक संस्था या प्रथा को व्यर्थ समझा था क्योंकि उसके भीतर हीनताग्रंथि का बीज उत्पन्न हो चुका था। तब से उसने जीवन में उच्चता प्रदर्शित करने की ठान ली थी। इस तरह रचनाकार ने रोहिणी के माध्यम से हीनभावना को व्यक्त किया है कि हीनभावना व्यक्ति को भीतर तक कचोट कर रख देती है। हीन व्यक्ति टूटकर रह जाता है।

जिजीविषा वास्तव में जीने की उत्कट लालसा या आशा है जो प्रत्येक इन्सान या प्राणी का स्थाई भाव है। "जिजीविषा समझौता नहीं करती, उसका यदि कोई समझौता है तो खुद अपने से। क्योंकि वह किसी लौकिक या परलौकिक शक्ति से प्राप्त नहीं होती, वह स्वतंत्र व्यक्ति में सिर्फ होती है। वह जिजीविषा ही निर्णय की शक्ति देती है और लोगों के संस्कारों में बैठी मृत्यु को भी छलकर अपने अस्तित्व का होना साबित करती है।"[18] जिंदगी को जीना इतना आसान नहीं। परंतु फिर भी जीने वाला प्रत्येक व्यक्ति जीने के रहस्यों को ढूंढता है और अकेलेपन के एहसास को भूलने का प्रयत्न करता है। स्वयं के इस अकेलेपन को दूसरों के साथ जोड़ देता है। इस तरह से व्यक्ति स्वयं के लिए जीता हुआ दूसरों के लिए भी जीने लगता है। 'रक्त की घाटी और शबे फितना' नामक कहानी में पात्र गुलवाशा की उस जिजीविषा को व्यक्त किया है जिसे वह त्याग चुकी थी जो उस आतंक में जीवन जीने के लिए विवश है। स्वयं के परिवार से दूर और वहां फैले उस आतंकवाद ने उसे भीतर तक खोखला कर दिया है। उसकी टूटती उम्मीदों को, और जीने की इच्छा को त्याग चुकी गुलवाशा कहती है "दुनिया के शोर ने मुझे जन्नत के ख्वाब से जगा दिया और इस दुनिया में आ गया। लेकिन यहां का हंगामा देखकर मैंने फिर आंखें बन्द कर ली और मौत की पनाह ली।"[19] इस तरह से गुलवाशा के भीतर छिपी उस न जीने की इच्छा को अभिव्यक्त किया है जो गुलवाशा देखती है।

यह जिजीविषा व्यक्ति को एक नई उम्मीद का मार्ग प्रशस्त करती है चाहे वह दुःखी जीवन में भी स्वयं के भीतर उस जीने की इच्छा को जगाए रखते हैं। इसी तरह कहानी कि अन्य पात्र लुबना जो इस आतंकवाद के पश्चात भी मन में पनप रही उम्मीदों के सहारे जीवन जी रही है। लुबना कहती है "मेरा दिल कहता है कि बेहतर समय आएगा और मैं उम्मीद करती हूँ कि तब तक मैं जीवित रहूँगी।"[20] स्पस्टतः लुबना जीने की इच्छा को मन में संजोए हुए है कि यह एक ना एक दिन अमन की वो लहर अवश्य आएगी जो वह भीतर दबाए हुए है। अतः कथाकार ने पात्रों के माध्यम से उनके भीतर उस जीजिविषा को अभिव्यक्त किया है और साथ ही ना जीने की इच्छा को भी व्यक्त किया है जो पात्र न चाहते हुए भी दुर्दम्य जिजीविषा को जीते है।

कुंठा वर्तमान समय में व्यक्ति के भाव-बोध का महत्वपूर्ण पहलू है। समाज में रहकर पूर्ण शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी जब व्यक्ति स्वयं के अधिकारों से वंचित रह जाता है तो उसका शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास भी रुक जाता है। परिणाम स्वरूप व्यक्ति का जीवन कुंठित हो जाता है। यौनेच्छाओं में वृष्टि और यौन तनाव की स्थिति में वह कुंठित हो जाता है। अर्थात् जीवन में असहजता कुंठा को जन्म देती है। सामान्य अर्थ में कहा जा सकता है कि जीवन में आने वाली रुकावट ही कुंठा कहलाती है। कुंठा, व्यक्ति के

जीवन को नीरस एवं ऐकाकी बना देती है। जीवन में निराश भर देती है। कुंठित व्यक्ति जीवन में निरंतर निराशाओं से घिरा रहता है। वह स्वयं को इस गर्त से निकाल नहीं पाता और कुंठित यौनेच्छा का शिकार हो जाता है। इसी कुंठित यौनेच्छा को 'प्रेतकामना' कहानी में वर्णित किया है। 'प्रेत कामना' कहानी का पात्र प्रोफेसर जो सेवानिवृत होने के पश्चात अकेले हो जाते है तो वह स्वयं कि इस कुंठित यौनेच्छा को स्वयं की ही विद्यार्थी अणिमा से बांटते हुए कहते हैं "जीवन से छिटक गया हूँ अब३ वहीं से छूट गया है मेरा सिरा३ एक निरा प्रेत बनकर रह गया हूँ मैं।"[21] इस तरह से पात्र जो जीवन से निराश है और इसी निराशा एवं अकेलेपन ने उसके जीवन को ओर अधिक कुंठित बना दिया है। इसी कुंठा के कारण उनकी यौनेच्छा अणिमा को देख जागृत होने लगती है जो स्वयं के जीवन से निराश होकर कहीं खो गऐ थे। कुंठित व्यक्ति जब निराश एवं जीवन से हतप्रभ हो जाता है तो जीवन में नए साथी की आवश्यकता महसूस करने लगता है ओर स्वयं की यौनेच्छा की पूर्ति हेतु वह अन्य स्त्री से संबंध स्थापित करने लगता है। इसी तरह से इस कहानी के पात्र ने जीवन में अकेलेपन को दूर करने के लिए आणिमा से संबंध स्थापित किए।

भारतीय समाज में पति पत्नी को ही शारीरिक संबंध बनाने की मान्यता है। आधुनिक भारत में व्यक्ति की विचारधारा बदली है। नैतिक–अनैतिक का भेद धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। इसका कारण बौद्धिक विकास के साथ–साथ पश्चिमी सभ्यता के प्रति पूर्णतः आकर्षित है। काम–भाव आज विश्व के व्यक्ति की प्रधान समस्या है। कम–भाव की पूर्ति हेतु व्यक्ति रिश्तो–नतों तक को भूलता जा रहा है। समाज में आए दिन इन समस्या से नारी, लड़की सब इसका शिकार हो रही हैं। यह समस्या घटने की बजाय आज बढ़ती ही जा रही है। इस समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है। महिलाएँ, बच्चियां, बूढ़े, जवान आज समाज में अपने को महफूज नहीं समझते हैं। 'फाँस' कहानी में काम–भाव कि भूख को मिटाने के लिए पिता अपनी बेटी को ही इस्तेमाल करने की कोशिश करता है। पिता द्वारा स्वयं की पुत्री के साथ कुकर्म करने में पिता को तनिक भी हिचक नहीं हुई। इस शर्मसार कुकर्म ने इस रिश्ते को तार–तार कर दिया है। स्वयं की काम भाव की आकृति को पूर्ण करने के लिए वह कहता है "शोर मत मचा ए छोरी कहकर चांटा रसीद कर दिया।"[22] इसी तरह पिता पुत्री के प्रति अनैतिकता स्पष्ट होती है जो एक बाप और बेटी के महान रिश्ते की परवाह किए बिना ही अपनी पुत्री को ही अपने काम–वासना का शिकार बनाता है। अतः लेखिका ने समाज में रह रहे व्यक्ति की मलीन सोच को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। इसी मलीन एवं घिनौनी सोच के कारण आज समाज में इस तरह की घटनाएं अधिक होती है और काम भाव की इस भूख को पूर्ण करने के लिए पुरुष किसी भी हद तक जा सकता है।

निष्कर्ष :-

मनीषा कुलश्रेष्ठ आधुनिक समय की सशक्त एवं प्रतिभाशाली रचनाकारों में सर्वश्रेष्ठ हैं। कथा साहित्य में पहचान बनाने वाली युवा कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में घटित हो रही विद्रूपताओं से आज के पाठक वर्ग को सच्चाईयों से रू–ब–रू कर लेखनी का परिचय दिया है। लेखिका के साहित्य का आधार व्यक्ति का अंतर्जगत है। लेखिका ने मानव के अतरंग जीवन यथार्थ, उसकी मानसिकता, तनाव, एकाकीपन, अहं भावना, हीनता ग्रंथि, कुंठित यौनेच्छा आदि मनोभावों को यथार्थ मर्मस्पर्शी ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियों के पात्रों में मानसिक तनाव होने के पश्चात् भी जो जीने की इच्छा है वह अपार है। मानसिक तनाव होते हुए भी यह इन सब समस्याओं के बावजूद जीवन को नए तरीके एवं एक नई

उम्मीद के साथ जीवन जीना जानते है चाहे समाज उन्हें फ्रीक ही क्यों न कहे। लेकिन उनके भीतर पनपी उस उम्मीद में फ्रीक होकर जीना सबसे बड़ी संतुष्टि है।

सन्दर्भ :-

1. सरस्वती भल्ला, 'आधुनिक हिंदी कविता : विविध आयाम', अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर, दिल्ली, संस्करण–2008, पृ. 24
2. शेख रब्बानी जिलानी, 'स्वातंत्र्योत्तर' हिन्दी उपन्यासों में समाज परिवर्तन', विद्या विहार, कानपुर, संस्करण–2007, पृ. 145
3. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग–रूप, रस–गंध–2', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 540
4. वही, पृ. 540
5. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग–रूप, रस–गंध–1', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 281
6. वही, पृ. 282
7. वही, पृ. 282
8. वही, पृ. 283
9. कलिका प्रसाद, 'बृहद हिन्दी कोश', ज्ञानमण्डल, लि. वाराणसी, संस्करण–2020, पृ. 447
10. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग–रूप, रस–गंध–2', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 436
11. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग–रूप, रस–गंध–1', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 157
12. डॉ. कुमारी रीना, 'मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना', वालनट पब्लिकेशन, भुवनेश्वर, संस्करण 2020, पृ. 185
13. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग–रूप, रस–गंध–1', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 63
14. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग–रूप, रस–गंध–1', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 65
15. राजकुमार राय, 'असामान्य मनोविज्ञान', प्रच्या प्रकाशन, वाराणसी, बिहार, संस्करण–1974, पृ. 33
16. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग–रूप, रस–गंध–2', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 472
17. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग–रूप, रस–गंध–1', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 39
18. डॉ. कुमारी रीना, 'मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना', वालनट पब्लिकेशन, भुवनेश्वर, संस्करण 2020, पृ. 430
19. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग–रूप, रस–गंध–2', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 472
20. वही, पृ. 472
21. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग–रूप, रस–गंध–1', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 56
22. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'रंग–रूप, रस–गंध–2', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2022, पृ. 337